Class- B.A-1 (Pol. Science Honours)
Paper- 1
Name of the Guest teacher- Khushbu kumari, dept. of Pol. science, V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani
lnmu

Topic - बहुलवाद पर लास्की के विचार

लास्की 20वीं शताब्दी के एक महान राजनीतिक विचारक, राजनीति के शिक्षक तथा इंगलैंड के लेबर पार्टी के नेता थे। वे बहुलवाद के समर्थक थे। लास्की के बहुलवादी विचार निम्नलिखित भागों में बाँटे जा सकते हैं-

(i) ऑस्टिन के (एकलवादी प्रभुसत्ता के) सिद्धांत की आलोचना।
(ii) समाज का संगठन तथा राज्य
(iii) राज्य तथा अन्य समुदाय
(iv) प्रजातांत्रिक राज्य में सत्ता
(v) सत्ता और आज्ञापालन

(1) ऑस्टिन के सिद्धांत की आलोचना - संप्रभुता के एकलवादी सिद्धांत के समर्थक बोदां, हॉब्स, रूसो, हीगेल, बेंथम तथा ऑस्टिन आदि माने जाते हैं। इनके अनुसार राज्य सत्ता का केवल एकमात्र स्रोत होता है, जो सर्वव्यापक तथा असीमित सत्ता रखता है। यह राज्य की सर्वोच्च सत्ता संप्रभुता कहलाती है। राज्य की इस संप्रभुता की कानूनी, सामाजिक, दार्शनिक तथा प्रशासनिक आधारों पर बहुलवादी आलोचना करते हैं। लास्की ने ऑस्टिन के एकलवादी सिद्धांत की आलोचना मुख्यत: निम्नलिखित तीन आधारों पर करते हैं-
(1) ऐतिहासिक आधार (2) कानूनी आधार (3) राजनीतिक आधार।

(i) ऐतिहासिक आधार - ऐतिहासिक आधार पर लास्की के अनुसार राज्य की संप्रभुता का जन्म एक खास समय पर खास परिस्थितियों के उत्पन्न हो जाने से हुआ।

Scanned with CamScanner

वर्तमान युग में उन परिस्थितियों की जांच से प्रभुसत्ता की लाभ या हानि स्पष्ट हो जाएगी। जांच करने पर पता चलता है कि संप्रभुता का सिद्धांत निरर्थक है। लास्की आगे लिखते हैं, "इस प्रकार प्रभुसत्ताधारी राज्य निर धर्मनिरपेक्ष व्यवस्था की धार्मिक व्यवस्था के खिलाफ सर्वोच्चता की स्थापना के साथ पैदा हुआ।" उनके अनुसार "संप्रभुता का तर्क ऐतिहासिक है, न कि निरंकुश।" इतिहास में कभी भी संप्रभुता निरंकुश शक्ति के रूप में नहीं रही, सदैव इस पर कुछ न कुछ नियंत्रण ही रहे हैं।"

(2) कानूनी आधार – कानूनी आधार पर लास्की कानूनी संप्रभुता की मुख्य विशेषताओं, समाज में निश्चित तथा निरंकुश प्रभुसत्ता, इसकी अविभाज्यता, अदेयता तथा कानून का कोई नियंत्रण संप्रभुता पर न होना की आलोचना तीन मुख्य आधारों पर करते हैं। राज्य एक कानूनी व्यवस्था नहीं है, इसकी शक्ति असीमित नहीं है तथा कानून का सार आज्ञा नहीं है। लास्की कहते हैं, " किसी प्रभुसत्ताधारी के पास कहीं भी असीमित शक्तियां नहीं रही हैं।" कानून को लास्की प्रभुसत्ताधारी की आज्ञा नहीं मानते। हर प्रभुसत्ता धारी कानूनी रूप से असीमित शक्ति नहीं रखता, उसकी हर आज्ञा कानून नहीं हो सकती। लास्की के अनुसार प्रभुसत्ता विभाजित तथा सीमित होती है। इसके अलावा कानूनी संप्रभुता राजनीतिक एवं लौकिक संप्रभुता से भी भिन्न है। इन सब कठिनाइयों की वजह से प्रभुसत्ता के कानूनी सिद्धांत को राजनैतिक दर्शन के लिए उपयुक्त मानना असंभव है।

Scanned with CamScanner

(3) राजनीतिक आधार - राजनीतिक संगठन के सिद्धांत के रूप में ऑस्टिन की संप्रभुता की लास्की ने बहुलवादी आधार पर कड़ी आलोचना की। लास्की संप्रभुता के राजनीतिक रूप को देखने के लिए सिद्धांत की बजाए वास्तविकता पर नजर डालने की बात कहते हैं। लास्की लिखते हैं, "एक वास्तविक विश्लेषण इस बात से सहमत होगा कि सब व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए राज्य की इच्छा वह है जो अपने क्षेत्र में सारी दूसरी इच्छाओं की परिधि निश्चित करती है। इस प्रकार की इच्छा राज्य की इच्छा या शक्ति गैर-उत्तरदायी असीमित इच्छा नहीं हो सकती।" राज्य की यह व्यावहारिक इच्छा वास्तव में सरकार की इच्छा है और सरकार की इच्छा का हमेशा जनता के द्वारा समय-समय पर चुनावों के द्वारा निश्चय किया जाता है। इस प्रकार वास्तविक रूप से सरकार के रूप में राज्य सीमित है और उसका शक्ति के ऊपर स्थायी अधिकार नहीं है। उनके अनुसार हर राज्य तथा सरकार मर्यादित, सीमित तथा उत्तरदायी होनी चाहिए और बिना इसके राजनीतिक व्यवस्था का संगठन कमजोर रहेगा, शक्तिशाली नहीं। इस प्रकार राज्य की आंतरिक निरंकुश प्रभुसत्ता की लास्की ने ऐतिहासिक कानूनी तथा राजनैतिक आधारों पर आलोचना की, और सीमित, विभाजित प्रभुसत्ता के बहुलवादी सिद्धांत को मान्यता दी।

(ख)(ii) समाज का संगठन तथा राज्य - लास्की राज्य तथा समाज में भेद करते हैं तथा समाज और राज्य के संगठन, उद्देश्य व प्रकृति में अंतर मानते हैं।

Scanned with CamScanner

वे ग्रीक दार्शनिकों, प्लेटो तथा अरस्तु, हीगल और बोसांके जैसे आदर्शवादियों के विचार का खंडन करते है क्योंकि ये आदर्शवादी राज्य तथा समाज को एक मानते हुए राज्य को असीम शक्ति प्रदान कर देते हैं। लास्की राज्य तथा समाज में अंतर मानते है। राज्य समाज - व्यवस्था के मूलभूत तत्वों को तय कर सकता है किंतु यह इससे मिलता - जुलता नही है और इस अंतर के अस्तित्व को समझ लेना राज्य को समझने की मूलभूत आवश्यकता है। वे राज्य के काम करने के तरीके तथा समाज के तरीके को भिन्न मानते हैं। समाज का संगठन एकात्मक न होकर संघात्मक है और बिना समाज को संघात्मक माने समाज की सही जानकारी नहीं पाई जा सकती। वे समाज को दूसरे व्यक्तियों के साथ मिल - जुल कर अपने व्यक्तित्व को निखारने का साधन मानते हैं। राज्य समाज का सेवक है तथा समाज से बहुत छोटा, बहुत सीमित तथा भिन्न है। इसके अलावा लास्की समाज को संघीय मानते है तथा संप्रभुता को संघीय ही होना चाहिए, क्योंकि ऐसे समाज में संघीय प्रभुसत्ता ही हो सकती है। इस प्रकार समाज के संगठन के आधार पर लास्की राज्य के सीमित रखे जाने की सिफारिश करते हैं तथा केवल बहुलवादी आधार को मान्यता देते है।

(iii) राज्य तथा अन्य समुदाय - मनुष्य अपनी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समाज का सदस्य बनता है। समाज की प्रकृति संघीय है क्योंकि मनुष्य, समाज में विभिन्न समूहों तथा समुदायों में संगठित होता है। मनुष्य राज्य का सदस्य

Scanned with CamScanner

होता है तथा विभिन्न समुदायों का भी समुदाय एक मानव समूह के आम उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अस्तित्व में आते हैं। वे कार्यों को करते हैं तथा कार्यों का समर्थन करते हैं। समूह एक वास्तविकता है उसी प्रकार जैसे एक राज्य है तथा इसे कुछ हितों को बढ़ावा देना होता है तथा कुछ कार्यों की सेवा करनी पड़ती है। यह राज्य के ऊपर आश्रित नहीं रहता। इस प्रकार लास्की समूह तथा समुदायों को महत्वपूर्ण वास्तविक तथा राज्य से स्वतंत्र मानते हैं। लास्की लिखते हैं, "राज्य एक लोक सेवा निगम है, यह दूसरे समुदायों से दो कारणों से भिन्न है-

(i) यह एक ऐसा समुदाय है जिसकी सदस्यता अनिवार्य है।

(ii) इनकी प्रकृति प्रादेशिक है।

हर समुदाय विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। यह मनुष्यों के नागरिक के रूप में हितों की रक्षा करने वाला समुदाय है। इस प्रकार लास्की समाज को समुदायों में विभाजित मानते हैं जो राज्य की तरह ही प्राकृतिक है तथा राज्य को एक विशेष प्रकार का समुदाय मानते हैं।

(iv) प्रजातांत्रिक राज्य में सत्ता - लास्की संप्रभुता के स्थान पर सत्ता शब्द का प्रयोग करते हैं। लास्की के विचार वर्तमान प्रजातंत्रों में सत्ता के आधार को अधिक विस्तृत करने के पक्ष में है जो नागरिकों तथा उनके समुदायों द्वारा कानून बनाने और राज्य के महत्वपूर्ण निर्णयों के कामों में हिस्सा लेने से ही सम्भव हो सकता है। निर्णय लेने के तरीके

Scanned with CamScanner

का विकेंद्रीकरण किया जाना चाहिए तथा सत्ता का काम लोगों के अनुभव के आधार पर चलना चाहिए। अतः एक प्रजातांत्रिक सरकार का आधार है कि नागरिक इसके कामों में खुल कर हिस्सा लें। केवल नागरिकों को न केवल मतदान द्वारा बल्कि आर्थिक और प्रशासनिक मामलों में भी हिस्सा लेना चाहिए। नागरिकों तथा समुदायों की सलाह से चलाया जाना प्रजातांत्रिक सत्ता के लिए आवश्यक है। लास्की राज्य की सत्ता को उत्तरदायी सत्ता के रूप में स्थापित किये जाने की सलाह देते हैं और इसके लिये वह तीन तरीके बताते हैं–

(i) सत्ताधारी को या सरकार को सत्ता से हटाने के तरीके दिये जाने चाहिए।

(ii) सलाहकार - संस्थाओं का संगठन किया जाना चाहिए।

(iii) नागरिक समान रूप से शिक्षित तथा आर्थिक रूप से भी समान होने चाहिए। तभी सत्ता उत्तर-दायी एवं प्रजातांत्रिक होगी।

(v) सत्ता तथा आज्ञापालन – सत्ता की दो मुख्य विशेष समस्याएं हैं–

(i) सत्ता किस प्रकार नागरिकों की स्वाभाविक आस्था पा सकती है तथा

(ii) यह आस्था किस प्रकार अधिक से अधिक हो सकती है

परंपरागत सिद्धांत के अनुसार संप्रभुता का आज्ञापालन स्वभाव से या राज्य की शक्ति के भय से लोग करते हैं किंतु यह दृष्टिकोण उचित नहीं माना जा सकता। राज्य की संप्रभुता

Scanned with CamScanner

का प्रयोग सरकार करती है। यदि सरकार जनता से आज्ञापालन करवाना चाहती है तो इसे नैतिक आधार पर स्थापित करना होगा तथा इसे जनता के अनुभव को ध्यान में रखते हुए अपने निर्णय करने होंगे। तभी यह सत्ता आज्ञापालन करवाने की अधिकारी होगी।

आलोचना-

लास्की ने अपने विचारों की आलोचना स्वयं ही अपनी पुस्तक के 1934 में जोड़े गए पहले अध्याय में की है। लास्की के विचारों की आलोचना हम निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से कर सकते हैं-

(i) ये सारे विचार, जो बहुलवादी विचार के नाम से जाने जाते हैं, उदारवादी मान्यताओं पर आधारित है। उदारवाद राज्य तथा समाज को मार्क्सवादी वैज्ञानिक आधार पर आधारित नहीं मानता।

(ii) उदारवाद यह तो मानता है कि समाज में वर्ग होते हैं किंतु यह नहीं मानता कि इन वर्गों का संघर्ष समाज में होता रहता है।